PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 5, ISSUE 6

शांताकुमार के कविताओं में राजनीतिक चित्रण

डॉ. मंजूर चॉंदभाईसैय्यद
(हिन्दी विभाग)
सावित्रीबाई फुले, पुणे विश्वविद्यालय पुणे
(महाराष्ट्र) भारत

श्री. नितीन दत्तात्रेय पंडित
शोध छात्र (हिन्दी विभाग)
सावित्रीबाई फुले, पुणे विश्वविद्यालय पुणे
(महाराष्ट्र) भारत

समाज में जो भी गति विधियॉं होती है एवं घटनाएँ घटित होती है वह राजनीति का ही अंग होती है। राजनीति के संदर्भ में नालंन्दा विशाल शब्द सागर में श्री नवलजी ने अर्थ बताया है –

'राजनीति मतलब राज्य की वह नीति जिसके अनुसार प्रजा शासन तथा पालन और अन्य राज्यों से व्यवहार होता है।' राजनीतिक का अर्थ राजनीति से संबंधी अर्थात जो राज्य शासन चलाता है, तथा प्रजा पर शासन करता है एवं अन्य राज्यों के साथ व्यवहार होता है। राजनीतिक में राजनीति संबंधी व्यवहार एवं जो घटना, बातें होती है उसे राजनीतिक कार्य कहते है। साहित्य में राजनीति संबंधी जो विचार आते है उसे राजनीतिक साहित्य कहा जाता है। सामाजिक परिवेश और राजनीति का संबंध अंत्यत निजी है। गॉव की सामान्य से सामान्य घटनाएँ राजनीति से प्रचलित होती है। राजनीति और समाज एक दूसरे से जुड़े है फिर भी राजनीति से सामाजिकता की दृष्टि से अलग मानना होगा राजनीति के अंतर्गत विशिष्ट समाज का नेतृत्व, सभाएँ, गुटबाजी, आयोजन–नियोजन, कार्यक्रम पंचायत, पुलिस थाना, जेल, चुनाव, न्यायालय, गुंडागर्दी राष्ट्रीय पर्व, राष्ट्रभक्ति, आदि संबंधी अनेक बातें समाहित रहती है।

शांताकुमार श्रेष्ठ राहित्यकार ही नहीं कुशल राजनेता भी होने के कारण राजनीति के अनुभवों को अपने काव्य में आना अनायास है। अपने राजनीतिक अनुभव एवं कल्पना तथा मनोभावों की अभिव्यक्ति के लिए साहित्य का सृजन करते हुए अपनी कविताओ में अनेक राजनीतिक प्रसंगो का चित्रण प्राप्त होता है उसे सविस्तार से देखेंगे।

शांताकुमार व्दारा रचित 'ओ प्रकासी मीत' इस काव्य संग्रह में कुछ कविताएँ राजनीतिक परिस्थिति का परिचय देनी वाली है। 'आज तूफान का मौसम' इस कविता में कवि ने आपात कालीन परिस्थिति का चित्रण किया है। कवि स्वयं इस काल में जेल में बंदी थे। इसकारण कविने तत्कालिन परिस्थिति पर एवं शासन पर व्यंग किया है।

जैसे – "कौन है वह निम्ठुर विधाता। जो अपनी बनाई.....

सजी सवॉशी बसाई । जयती की मनोधरी वागिया में खुद

ही घुमणा के आग । तमाशा देखता रहा"

सन् 1975 में देश में इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री थी और कॉग्रेस का शासन था। उस समय इंदिरा गांधी ने देश में लोकतंत्र के शासन को नष्ट करके अपनी खुर्शी बचाने के लिए आपातकाल की स्थिति निर्माण की थी। जनतांत्रिक मूल्यों के उजले रुप को अपने अहंकार के सामने धुंधला बना दिया था। ईश्वर को पुकारकर कवि बताता है कि यह कौन सा शासन है। लोगों को सरेआम बंदी बनाया जा रहा था, आज देश में शांति नहीं तूफान का मौसम है।

राजनीतिक चिंतनपरक अनुभूति कवि की कविता में व्यापक मोड़ दिया है। कवि सचेत करते हुए कहते है कि लोगों में विद्रोह की अग्नि फूलने पर तुम्हारा झूठ हारेगा यह 'तुम्हारा झूठ हारेगा' कविता में स्पष्ट करते हुए चेतावणी देते है।

"विद्रोह की अग्नि बनेंगे, छलकपट के फूस को स्वाहा करेंगे।

तब तुम्हें अपना आप ही धिक्कारेगा

यह देश जीतेगा, तुम्हारा झूठ हारेगा।"

कवि कहते है कि तुमने लोगों में जो झूठ प्रस्तापित करते हुए छल–कपट किया। आपातकाल की स्थिति निर्माण की है। इससे लोगों की स्वतंत्रता पर तुमने लोक लगाने का काम किया किंतु तुम सचेत रहो एक दिन लोगों के हृदय में विद्रोह की अग्नि निकलेगी तब तुम्हारा झूठ जल जाएगा नष्ट होगा। तब तुम अपने आप को किए कार्य के कारण कोसोगी, धिक्कारोगी इस प्रकार इंदिरागांधी के तर्फो का विरोध कविने किया है।

कवि जब सन् 1953 में कश्मिर आंदोंलन में हिसार जेल में बंदी थे, तब अपनी भारतमाता के शीश मुकुटमनी कश्मिर को बचाने के लिए जो देशभक्ति एवं बलिदान की भावना थी उसकी अभिव्यक्ति करते हुए 'कारा भी काल कोठरी में' इस कविता में कविने स्पष्ट किया है।

"अपराध यही था मेरा, क्यों प्यार किया जननी से।

स्वदेश की मुक्ति हेतु घोष किया धरणी पे।"

कवि कहता है मुझे बंदी बनाया गया क्यो कि मेरा अपराध यह था कि मैंने अपनी भारत माता से (देश) से प्यार किया और उसकी जयजयकार का नारा लगाया।

"जननी का शीश कश्मिर काटने जब शत्रु आया।

मिट जाएगें पर यह न होगा, कह हमने कदम बढ़ाया।"

भारत से जब कश्मिर का विभाजन होगा तो हम कैसे देखते रहेंगे, मर जाएगें, मिट जाएगें, अपने प्राणों के बलिदान देंगे लेकिन भारत के शीश मुकुट को बचाएगें भारत भू से अलग नहीं होने देगें अपनी अनुभूति कवि अभिव्यक्त करते हुए कहते है।

"ज्यों–ज्यों अब्दुलशाही से सच्चाई पर प्रहार किया/त्यों–त्यों मतवालों ने अपने सुमनों को वार दिया/गोदी के लाल लुटे कितने, कितने बहनों के भाई गये।"

जब जब दुश्मने सचाई पर प्रहार किया तब भारत माता के सुपूतों ने अपने प्राणों को फूल बनाकर भारतमाता के चराणों में अर्पित कर दिया। केशरी ध्वज के लिए कुर्बान हो गये। कश्मिर में अपनें खून खेलकर भारत माता के लिए कुर्बान हो गये। 'ओ पतंगो' से देशभक्ति अपने राष्ट्र हित के पथपर चलने की प्रेरणा कवि पंतगे से लेता है। "मैं तुमसे सींखूगा जलना, मैं तुमसे सीखूंगा मरना अपने छोटे से जीवन को, तिल तिल कर यों अर्पण करना बढ़ते, गिरते, गिरकर उठते, उमंग से बढ़ते जाते हो...।"

इसतरह अपने पथपर निरंतर चलने की प्रेरणा कवि पतंग से लेता है। 'रक्षा बंधन' कविता में कवि ने ऐसे बंधन को बांधने के लिए कहा है कि जो तृषित नयन भारत–जननी के किसी आशा से देख रहें। मतलब भारत माता को गुलामी के जंजीर से मुक्त कर सके। धैर्य एवं बलिदान का दान दे सके। इसमे समर्पण करने का भाव व्यक्त है। 'जन्माष्टमी पर' कविता में शांताकुमार ने जन्माष्टमी के व्दारा राष्ट्रीय भावना का चित्रण किया है।

शांताकुमार स्वयं राजनेता एवं साहित्यकार होने के कारण उनकी कविताएँ जेल जीवन का दस्तावेज है। शांताकुमार एक नहीं बल्कि दो बार जेल यात्रा कर चूके है। इसकारण अपने जेल के समय में उन्होंने कविता एवं साहित्य सृजन किया। अपने स्वयं के अनुभवों को कविताओं में अभिव्यक्त किया है। उनकी कविताओ में देशभक्ति राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीय भावना, आक्रोश, प्रतिकार, जेल का वातावरण, तत्कालिन सरकार का चित्रण, विरोध शासन की नीति आदि द्रष्टव्य होती है।

शांताकुमार की कविताओं में राजनीति का चित्रण हुआ है। अपने स्वयं के अनुभवों को उन्होंने चित्रित करते हुए तत्कालिन शासन एवं परिस्थिति आपातकालीन स्थिति, जेल का जीवन एवं चित्रण, अपने काव्य में राष्ट्रीय भावना, प्रेरणा, चेतना स्पष्ट रुप में द्रष्टव्य होती है। अतः शांताकुमार के काव्य में राजनीतिक चित्रण शाश्वत एवं वास्ताविक रुप से चित्रित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. शांताकुमार का समग्र साहित्य – भाग – 2 संपा – रामकुमार भ्रमर
2. 'ओ प्रवासी मीत' – शांताकुमार
3. नालंन्दा विशाल शब्द सागर – श्री नवलजी
4. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्रामीण परिवेश